दादा गुरुओं के प्राचीन चित्र

[भँवरलाल नाहटा]

आर्य संस्कृति में गुरु का पद अत्यन्त महत्वपूर्ण है। परमात्मा का परिचय कराने वाले तथा आत्मदर्शन कराने वाले गुरु ही होते हैं। यों तो गुरु कई प्रकार के होते हैं पर जैनदर्शन में उन्हीं सद्गुरु को सर्वोच्च स्थान दिया गया है जो आत्मद्रष्टा हैं। जिसने मार्ग देखा है वही मार्ग दिखा सकता है क्योंकि दीपक से दीपक प्रकट होता है। हजारों बुझे हुए दीपक कोई कामके नहीं, जागती ज्योति एक ही विश्व को आलोकित कर सकती है। भगवान महावीर के पश्चात् अनेक सद्गुरुओं ने जैन-शासन का उद्योत किया है व धर्म को बचाकर अक्षुण्ण रखा है। पंचमकाल में ऐसे २००४ युगप्रधान क्षायिक द्रष्टा पुरुष होंगे ऐसा शास्त्रों में वर्णन है। खरतरगच्छ में कई युगप्रधान सद्गुरु हुए हैं जिनमें चारों दादा-गुरुओं का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है, उनकी हजारों दादावाड़ियां और मूर्त्ति, चरण-पादुके आदि आज भी पूज्यमान हैं।

आत्मदर्शन प्राप्ति के लिए सद्गुरु की पूजा-भक्ति अनिवार्य है। अतः भक्त लोग आत्मकल्याण के उद्देश्य से गुरु-भक्ति में संलग्न रहने से निष्काम सेवाफल अवश्य प्राप्त करते हैं। जैसे धान्य के लिए खेती करने वाले को घास तो अनायास ही उपलब्ध हो जाती है, उसी प्रकार पुण्य-प्राग्भार से इहलौकिक कामनाएँ भी पूर्ण हो ही जाती हैं। पूजन-आराधन के लिए जिस प्रकार प्रतिमा-पादुकादि आवश्यक है उसी प्रकार चित्र-प्रतिकृति भी दर्शन के लिए व वासक्षेप पूजादि के लिए आवश्यक है। तीर्थंकर चित्रावली के साथ गुरु-मूर्त्ति पादुकाओं को रखने की प्रथा प्राचीन काल से चली आती है। आज भी मन्दिरों में, लोगों के घरों में दादासाहब के चित्र हजारों की संख्या में हाथ के बने हुए पाये जाते हैं और अब यंत्र युग में तो एक-एक प्रकार के हजारों हो जांय, यह स्वाभाविक है। इस लेख में हमें दादा साहब के जीवनवृत्त से सम्बन्धित चित्रों का संक्षिप्त परिचय कराना अभीष्ट है जिससे हमारे इस कलात्मक और ऐतिहासिक अवदान पर पाठकों का विहंगावलोकन हो जाय।

जो तत्त्व व्याख्यान द्वारा या लेखन द्वारा सौ पृष्ठों में नहीं समझाया जा सकता उसे एक ही चित्रफलक को देख कर या दिखाकर आत्मसात् किया व कराया जा सकता है। चित्र-विधाओं में भित्तिचित्रों का स्थान सर्वप्रथम है। प्रागैतिहासिक कालीन गुफाओं के आडे टेढे अंकन से लेकर अजन्ता, इलोरा, सित्तनवासल आदि विकसित कलाधामों और राजमहलों, सेठों-रईसों के घरों व मन्दिर—दादावाड़ियों के भित्ति-चित्र भी अपनी कला-सम्पत्ति को चिरकाल से संजोये हुए चले आरहे हैं। दादासाहब के जीवनवृत्त संबन्धी चित्र अधिकांश मन्दिरों तथा दादा-वाड़ियों में ही पाये जाते हैं। जीर्णोद्धार आदि के समय प्राचीन चित्रों का तिरोभाव होना अनिवार्य है। पर इस परम्परा का विकास होता गया और आज भी मन्दिरों, दादावाड़ियों में जीवनवृत्त के विभिन्न भावों वाले चित्रों का निर्माण होना चालू है। बीकानेर, रायपुर, भद्रावती, उदरामसर, भद्रेश्वर आदि अनेक स्थानों के भित्तिचित्र सुन्दर व दर्शनीय हैं।

दादासाहब के चित्रों में दूसरी विधा काष्ठफलकों की है जिनका प्रारम्भ श्री जिनवल्लभसूरिजी, श्री जिनदत्त-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूरिजी के चित्रों से होता है। इसके बाद कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य-कुमारपाल एवं वादिदेवसूरि-कुमुदचन्द्र के शास्त्रार्थ के भाव वाले काष्ठफलक पाये जाते हैं। दादा-साहब के चित्रित-काष्ठफलकों का परिचय श्री जैन श्वेताम्बर पंचायती मन्दिर, कलकत्ता के सार्द्धशताब्दी स्मृति-ग्रन्थ में मैंने प्रकाशित किया है पर एक महत्त्वपूर्ण काष्ठफलक जिसपर श्रीजिनदत्तसूरिजी और त्रिभुवनगिरि के यादव राजा कुमारपाल का चित्र है और जो जेसलमेर के बड़े भण्डार में था पर अब श्री थाहरूशाह के भण्डार में वर्त्तमान है, अब तक प्राप्त कर प्रकाशित न कर सकने का हमें खेद है।

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजयजी के 'भारतीय-विद्या' के सिंघीजी के संस्मरणांक में एवं हमारे युगप्रधान जिनदत्तसूरि ग्रन्थ में प्रकाशित चित्र भी उस समय के आचार्य व श्रमण-श्रमणी वर्ग के नामोल्लेख युक्त होने से महत्त्वपूर्ण हैं। हमारे अभय जैन ग्रन्थालय - शंकरदान नाहटा कलाभवन का चित्र इन सब चित्रों में प्राचीन है जो दादासाहब के आचार्य पद प्राप्ति ११६९ से पूर्व अर्थात् सं० ११५० के आस-पास का है। पुरातन चित्रकला की दृष्टि से ये उपादान अत्यन्त मूल्यवान हैं।

काष्ठफलकों के पश्चात् ग्रन्थों में चित्रित पूर्वाचार्यों के चित्रों में हेमचन्द्राचार्य-कुमारपाल के चित्रों के पश्चात् खंभात भण्डार स्थित श्रीजिनेश्वरसूरि (द्वितीय) का चित्र अत्यन्त महत्व का है जो हमारे ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह में मुद्रित है। तत्पश्चात् कल्पसूत्र, शालिभद्र चौपाई आदि ग्रन्थों में श्री जिनराजसूरि, श्री जिनरंगसूरि आदि के चित्र उपलब्ध हैं। सिंघीजी के संग्रह के शाही चित्रकार शाहिवाहन चित्रित शालिभद्र चौपाई के ऐतिहासिक चित्र काल्पनिक न होकर असली है। अठारहवीं-उन्नीसवीं शती के विज्ञप्ति-पत्रों में जैनाचार्यों के संख्याबद्ध चित्र संप्राप्त हैं जो ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ से मंत्र, यंत्र आम्नाय गर्भित अनेक प्रकार के वस्त्र-पट चित्र पाये जाते हैं। तीर्थपट्ट, सूरिमन्त्र पट्ट व वर्द्धमानविद्या पट्ट में भी गुरुओं के चित्र हैं। हमारे संग्रह का श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथ पट्ट जो संवत् १४०० के आसपास का है, चित्रित है। उसमें श्रीतरुणप्रभसूरिजी महाराज और उनके शिष्य का महत्वपूर्ण चित्र अंकित हैं।

गत दो ढाई सौ वर्षों में दादासाहब के स्वतंत्र चित्र बने हुए मिलते हैं जो मन्दिरों, दादावाड़ियों, उपाश्रयों, लोगों के मकानों और राजमहलों तक में टंगे हुए पाये जाते हैं। उन चित्रों में दादासाहब के जीवन-चरित की महत्त्व-पूर्ण घटनाएं चित्रित हैं। बीकानेर दुर्ग-स्थित महाराजा गजसिंहजी के महल गजमन्दिर में श्रीजिनचन्द्रसूरि (चतुर्थदादा) और अकबर बादशाह के मिलन का चित्र लगा हुआ है। इसके अतिरिक्त यति जयचन्दजी के संग्रह में, श्रीजिनचारित्रसूरिजी के पास, बद्रीदासजी के मन्दिर कलकत्ता में, पूरणचन्द्रजी नाहर के संग्रह में पंचनदी साधन के एवं लखनऊ, जीयागंज आदि अनेक स्थानों में प्राचीन चित्र पाये जाते हैं। इन्हीं के अनुकरण में तपागच्छीय श्रीमान् हीरविजयसूरिजी महाराज और अकबर मिलन के चित्र भी पिछले पचास वर्षों में बनने प्रारम्भ हुए हैं। प्रसिद्ध वक्ता व लेखक मुनिवर्य श्री विद्या-विजयजी महाराज ने अपने लखनऊ चातुर्मास में सर्वप्रथम हीरविजयसूरिजी और अकबर का चित्र निर्माण कराया था।

खरतरगच्छ में चारों दादासाहब एवं जिनप्रभसूरिजी और सुलतान मुहम्मद बादशाह के मिलन सम्बन्धी जितने चित्र पाये जाते हैं उनमें लोकप्रवाद और स्मृति-दोष से एक का जीवनवृत्त दूसरे से सम्बन्धित समझकर घटना विपर्यय अंकित हो गया है पर हमें यहाँ उसके ऐतिहासिक विश्लेषण में न जाकर लोकमान्यता और श्रद्धा-भक्ति द्वारा निर्मित चित्रों का परिचय देना ही अभीष्ट है।

सौ वर्ष पूर्व जयपुर के रामनारायणजी तहबीलदार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के रास्ते में रहने वाले गणेश मुसव्वर (चित्रकार) को बंगाल में बुलाया गया और उसने बालूचर व कलकत्ता में लगभग पन्द्रह वर्ष रहकर सैकड़ों जैनचित्रों का निर्माण किया। वे चित्र कलासमृद्धि में अपूर्व और मूल्यवान हैं। यदि उन समस्त चित्रों का सांगोपांग वर्णन लिखा जाय तो सैकड़ों पेज हो सकते हैं पर हम यहां केवल दादासाहब आदि के चित्रों का ही संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं।

१ श्री अभयदेवसूरिजी—यह चित्र ७३×१७ इंच का है। इस चित्र में दाहिनी ओर नगर का दृश्य है जिसके तीनों ओर परकोटा और दो दरवाजे दृष्टिगोचर होते हैं। नगर के तीन स्वर्णमय शिखर वाले जिनालयों पर ध्वजादण्ड सुशोभित है। सामने पौषधशाला में श्री अभयदेवसूरिजी महाराज विराजमान हैं जिनके समक्ष श्यामवर्णवाली शासनदेवी उपस्थित है जिसके सुनहरे जरी के वस्त्र व मुकुट अलंकारादि पहने हुए हैं। शासन देवी नौ कोकड़ी सुलझाने के लिए आचार्यश्री को दे रही है। बाहर अभयदेवसूरिजी महाराज अपने दश शिष्यों के साथ विहार करके जा रहे हैं। साथ में आठ श्रावक तथा दो बालक भी चल रहे हैं। सूरि महाराज एक पलाश वृक्ष के नीचे जयतिहुअण स्तोत्र द्वारा प्रभु की स्तवना करते हैं। पास में ६ साधु बैठे हैं और सात श्रावक खड़े हैं। जंगल में जहां गाय का दूध झरता था, स्तंभन पार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिमा प्रकट होती है। एक श्रावक के हाथ में प्रतिमा है। फिर सिंहासन पर विराजमान करके श्रावक लोग स्वर्णकलशों से अभिषेक करते हैं। दो श्रावक प्रभुको न्हवण कराते हैं, चार श्रावक कलश लिये खड़े हैं। एक श्रावक फिर प्रभु का न्हवण जल लाकर सूरिजी के ऊपर छींटता है जिससे रोग निवारण हो जाता है। पृष्ठभूमि में खजूर, ताड़, आम्र, अशोकादि के वृक्ष विद्यमान हैं। मैदान और टीलों पर कहीं-कहीं हरियाली छाई हुई है। चित्र परिचय में निम्नोक्त वाक्य लिखे हुए हैं:—

(१) १ शासन देवताने कोकड़ी ९ दीनी (२) श्री अभयदेवसूरि (३) पोशाल (२) अभयदेवसूरि (३) १ जयतिहुअण स्तवना करी श्री थंभणा पार्श्वनाथजी प्रगट भया जमीन से, णवण कराया ४ पखाल छींटता रोग गया रक्तपित्तीका।

(२) श्री जिनदत्तसूरि, श्री जिनकुशलसूरि—यह चित्र ७५×१७ इंच का है जिसमें दोनों दादा गुरुओं के चित्रों में विभिन्न भाव हैं। चित्र के वाम पार्श्व में श्री जिनदत्तसूरिजी महाराज विराजमान हैं जिनके समक्ष ५२ वीर [१८] एवं पृष्ठ भाग में ६४ योगिनी (२४) अवस्थित हैं। गुरुदेवके आगे स्थापनाजी एवं हाथ में मुखवस्त्रिका है। दूसरा पंचनदी का भाव है जिनके तटपर पाँच मन्दिर बने हुए है। पाँचों पीर गुरुदेव के समक्ष करबद्ध खड़े हैं। तीसरा अजमेर के उपाश्रय का है जिसमें गुरुदेव अपने ६ शिष्यों के साथ प्रतिक्रमण कर रहें हैं और कड़कती हुई बिजली को पात्र के नीचे दबा देते हैं। चौथा भाव गुरुदेव के नगर प्रवेश का है, घोड़े के नीचे दबकर मरे हुए मुगलपुत्र को तीन मुसलमान उठाकर लाते हैं। वृक्ष के नीचे बैठे हुए गुरुदेव उसे मंत्रशक्ति से जिला देते हैं। पाँच मुसलमान करबद्ध खड़े हैं। गुरुदेव के पृष्ठ भागमें पाँच शिष्य बैठे हैं गुरुदेव के विहार में पीछे छत्रधारी व्यक्ति व नौ शिष्य दिखाये हैं, सामने १६ श्रावक चल रहे हैं जिनकी पगड़ी पर शिरपेच बँधे है, लम्बे श्वेत जामे पहिन कर कमरबंद व उत्तरासन लगाया हुआ है।

पाँचवाँ भाव श्रीजिनकुशलसूरिजी से सम्बन्धित मालूम देता है। नगर के मध्य में गुरुदेव उपाश्रय में प्रवचन कर रहे हैं। पाँच साधु सामने खड़े हैं, सात श्रावक बैठे हुए व्याख्यान सुन रहे हैं, भक्त की दुखभरी पुकार सुन कर डूबती हुई नौका को किनारे के दृश्य में हाथ के सहारे से तिरा देते हैं। चित्रकार ने चित्र-परिचय रूप कुछ भी नहीं लिखा है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३ श्री जिनचन्द्रसूरि (अकबर प्रतिबोधक)— यह चित्र ७४॥ × १६॥ इन्च लम्बा है। इसमें नगर के चार दरवाजे हैं जिनमें दो दोनों ओर व दो पास-पास ही दिखाये हैं। नगर के कुछ मकान व गुंबजदार मस्जिद हैं तथा उपाश्रय का भाव भी दिखाया है। नगर के मध्य में शाही दुर्ग—राजप्रासाद है जिसके बाहर दो संतरी पहरा दे रहे हैं। महल के बाँयें कक्ष में चौकी पर श्री जिनचंद्र-सूरिजी व उनके पृष्ठ भाग में ७ शिष्य बैठे हैं। सामने सिंहासन पर बादशाह बैठा है जिसके पीछे चारव्यक्ति पंखा, किरणिया-आदि राजचिन्हधारी तथा दो उमराव बैठे हैं। सूरिजी के पास एक काली बकरी और दो श्वेतरंग के बच्चे खड़े हैं। महल के दूसरे कक्ष में भी इसी भाव का चित्र है पर सूरिजी और सम्राट को आसमान की ओर देखते दिखाये हैं जिससे मालूम होता है कि काजी की टोपी वाला भाव चित्रित करना चित्रकार भूल गया है। उपाश्रय कक्ष में शासनदेवी सूरिजी को थाल अर्पित करती है जिसे आसमान में स्थित चन्द्रोदय देख कर सब लोक विस्मित हो जाते हैं। उपाश्रय में चार साधु व एक श्रावक भी विद्य-मान है। खड़े हुए तीन श्रावकों में एक व्यक्ति हाथ ऊँचा करके अमावस्या का चन्द्रोदय बता रहा है। नगर के बाहर अश्वारोही व ऊंट सवार दोनों ओर दौड़ते हुए जा रहे हैं।

जीयागंज के श्री विमलनाथजी के मन्दिर स्थित दादा जी के मन्दिर में काठगोला से आये हुए निम्नोक्त महत्व-पूर्ण चित्र लगे हुए हैं। ये चित्र भी यशस्वी चित्रकार गणेश के बनाये हुए हैं। परिचय इस प्रकार लिखा है :

(१) कलम गणेश चतेरा की साकीन जयपुर ठि० चांदपोल दरवाजा खेजड़ा के रस्ते रामनारायणजी तवील-दार के पास "बावन वीर चौसठ जोगनी" दादा श्रीजिनदत्त-सूरिजी। साइज १८×२२।

(२) अजमेर में बिजली पात्र के नीचे।

(३) दादा श्री जिनप्रभसूरिजी काजी की टोपी अकबर (?) के दरबार में।

श्री जिनप्रभसूरि मुगल की टोपी उतारी आसमान सुं वोधा सु भाव।

(४) दादा श्री जिनचन्द्रसूरिजी थाली आकाश में अकबर के दरबार में। शासन देवी द्वारा थाली का प्रदान। श्री जिन मणीयाला चन्द्रसूरिजी चन्द्रमा उगायो थाल चढ़ा-कर, सो भाव।

(५) श्री जिनदत्तसूरिजी उज्जैन नगरी थांभ फाड़ पोथी निकाली। सामेला करके उज्जैन नगरी में पधारते हैं।

(६) श्री जिनदत्तसूरिजी मुलतान में पांच नदी पांच पीर वश किया।

(७) श्रीजिनकुशलसूरिजी महाराज दरियाव में जगत सेठ को जहाज तिरायो।

(८) श्री जिनदत्तसूरिजी बादशाह सुं भैंसा के मुख सुं बात कराई सो भाव।

जीयागंज के श्री संभवनाथ जिनालय में २७ × १५ साइज के दो चित्र लगे हुए हैं जिनमें एक श्री जिनदत्त-सूरिजी और दूसरा श्री जिनकुशलसूरिजी के जीवनवृत्त से संबन्धित है। श्री जिनदत्तसूरिजी के चित्र में बावन वीर, चौसठ योगिनी; पंचनदी-पंचपीर, बिजली वश कीधी, उच्चनगर, बड़नगर, अंबड़ हाथे अक्षर आदि के ७ भाव हैं। श्री जिनकुशलसूरिजी के चित्र में 'जीहाजतारी' के भाव के अतिरिक्त एक में युद्ध चित्र, एक में नगर के उपाश्रय में विराजमान गुरुदेव व बाह्य दृश्य भी हैं पर चित्र परिचय नहीं दिया है।

कलकत्ता के श्री महावीर स्वामी के मंदिर में भी चार-पांच चित्र हैं। जिनमें एक छोटा चित्र मणिधारी जिनचन्द्रसूरिजी और सामने बादशाह (राजा मदनपाल) अपने मुसाहिबों के साथ है। चाँदा-चन्द्रपुर के जिनालयस्थ दादा देहरी में मणिधारीजी महाराज का चित्र लगा हुआ है। यों छोटे-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोटे बहुत से दादा साहब के प्राचीन चित्र पाए जाते हैं। लखनऊ में भी दादा साहब के चित्र देखे स्मरण है।

प्राचीन चित्रकला के चित्रों का परिचय देने के पश्चात् उसीके अनुकरण में वर्त्तमान के यशस्वी और भारत-विश्रुत चित्रकार श्री इन्द्रदूगड़ का बनाया हुआ विशाल और कला-पूर्ण चित्र कलकत्ता-दादावाड़ी में लगा हुआ है जिसमें बड़े दादासाहब के जीवनवृत्त से सम्बन्धित कई भाव चित्रित हैं। व्याख्यान वाचस्पति मुनि श्री कान्तिसागरजी ने पहले भांदकजी में भित्ति-चित्र बनवाये थे और तत्पश्चात् 'श्री जिन-गुरु-गुण-सचित्र पुष्पमाला' पुस्तक में इकरंगे और तिरंगे चित्रों का भी प्रकाशन करवाया है जिसमें चारों दादा साहब के २४ तिरंगे एवं २ काष्टफलक चित्र प्रकाशित हुए हैं।

गणिवर्य हेमेन्द्रसागरजी के पत्रानुसार सूरत में श्री जिन-दत्तसूरि ज्ञानभण्डार में कतिपय चित्र लगे हैं जिनमें १७ × १७ इंच के (१) क्षमाकल्याणोपाध्याय व मुन्ना-लाल जौहरी व (२) जिनलाभसूरिजी का चित्र दो ढाई सौ वर्ष प्राचीन हैं। एक बड़े चित्र में बीच में जिनचन्द्रसूरिजी, दाहिनी ओर अभयदेवसूरिजी, बांई तरफ जिनवल्लभसूरिजी हैं। दूसरे में वर्द्धमानसूरिजी (मध्य में), जिनेश्वरसूरिजी (दाहिने) और बुद्धिसागरसूरिजी (बांये) हैं। एक चित्र मणिधारीजी का है जिसमें बादशाह सामने खड़ा दिखाया गया है। चौथे दादा श्री जिनचन्द्रसूरिजी के चित्र में अकबर मिलन का भाव चित्रित है। ये चित्र ५५-६० वर्ष पुराने हैं और श्री जिनकृपाचन्द्रसूरिजी के उपदेश से बने हुए हैं।

और भी दादासाहब व दूसरे खरतरगच्छाचार्यों के चित्र उपाश्रयों आदि में पर्याप्त पाये जाते हैं जिन्हें शोधपूर्वक प्रकाश में लाना चहिए।

मुनि जिनविजयजी के प्रकाशित जिनदत्तसूरिजी के चित्रमय काष्ठफलकके तीन ब्लॉक 'भारतीय विद्या'-निबन्ध संग्रह में प्रकाशित हुए हैं। इनमें से जिनदत्तसूरि सम्बन्धी दो ब्लॉक यहां प्रकाशित कर रहे हैं। इनका विवरण मुनिजी ने इस प्रकार दिया है :—

इस पट्टिका के बांये और दाहिने भाग में चित्रित दृश्यों के दो खंड हैं। इन दोनों खण्डों में जिनदत्तसूरिजी की व्याख्यान-सभा का आलेखन है। इसके ऊपर वाले चित्र-खण्ड में मध्यमें श्रीजिनदत्तसूरि विराजमान हैं और उनके सन्मुख पं० जिनरक्षित बैठे है। जिनरक्षित के पीछे दो श्रावक हैं एवं श्रीजिनदत्तसूरिजी के पृष्ठ भाग में एक श्रावक और दो श्राविकाएं बैठी हैं। नीचे वाले चित्र-खण्ड में मध्यमें श्रीजिनदत्तसूरि और उनके सम्मुख श्रीगुण-समुद्राचार्य और उनके पीछे एक मुनि और एक श्रावक बैठा है। जिनदत्तसूरि के पृष्ठ भागमें दो श्रावक बैठे हैं। सूरिजी के सामने स्थापनाचार्य रखे हैं, जिनपर 'महावीर' अक्षर लिखे हुए हैं।

इस चित्रावली से विदित होता है कि यह सचित्र काष्ठपट्टिका श्रीजिनदत्तसूरिजी के निजी संग्रह की किसी ताड़पत्रीय पुस्तक की है। किसी भक्त श्रावक ने उन्हें किसी बड़े और महत्वपूर्ण ग्रन्थ को लिखाकर भेंट किया था, जिसके ऊपर की यह एक सुन्दर चित्रालंकृत पटड़ी है। संभव है कि इसमें आलेखित स्त्रीपुरुष इस ग्रन्थ को भेंट करने वाले श्रावक परिवार के ही मुख्य व्यक्ति हों।

मारवाड़ के विक्रमपुर के श्रेष्ठी देवधर निर्मापित जिनालय में सूरिजी ने एक भव्य महावीर प्रभु-प्रतिमा की प्रतिष्ठा की थी। संभव है कि इस चित्रपट्टिका में इसी प्रतिष्ठा-प्रसंगका आलेखन हो। क्योंकि सूरिजी के समक्ष स्थित स्थापनाचार्य पर "महावीर" नाम लिखा हुआ है। कदाचित् इसी देवधर ने इस पट्टिका के साथ वाले ग्रन्थ को लिखा कर सूरिजी को समर्पित किया हो और इस पट्टिका में उक्त प्रसंगके स्मारक-स्वरूप चित्राङ्कन किया गया हो। जैन सम्प्रदाय में ऐसे प्रसंगों के निमित्त पुस्त-कादि लेखन व चित्रपट्टिकादि के आलेखन की प्रवृत्ति अति प्राचीन काल से चली आ रही है।

हम इसे विक्रम की बारहवीं शती के अंतिम और तेरहवीं शताब्दी के प्रारम्भ के चित्रालेखन की प्रतीक, निश्चित रूपसे मान सकते हैं, इतनी प्राचीन अन्य कोई सुन्दर चित्राकृति अद्यापि हमें उपलब्ध नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री जिनदत्तसूरि और पंडित जिनरक्षित

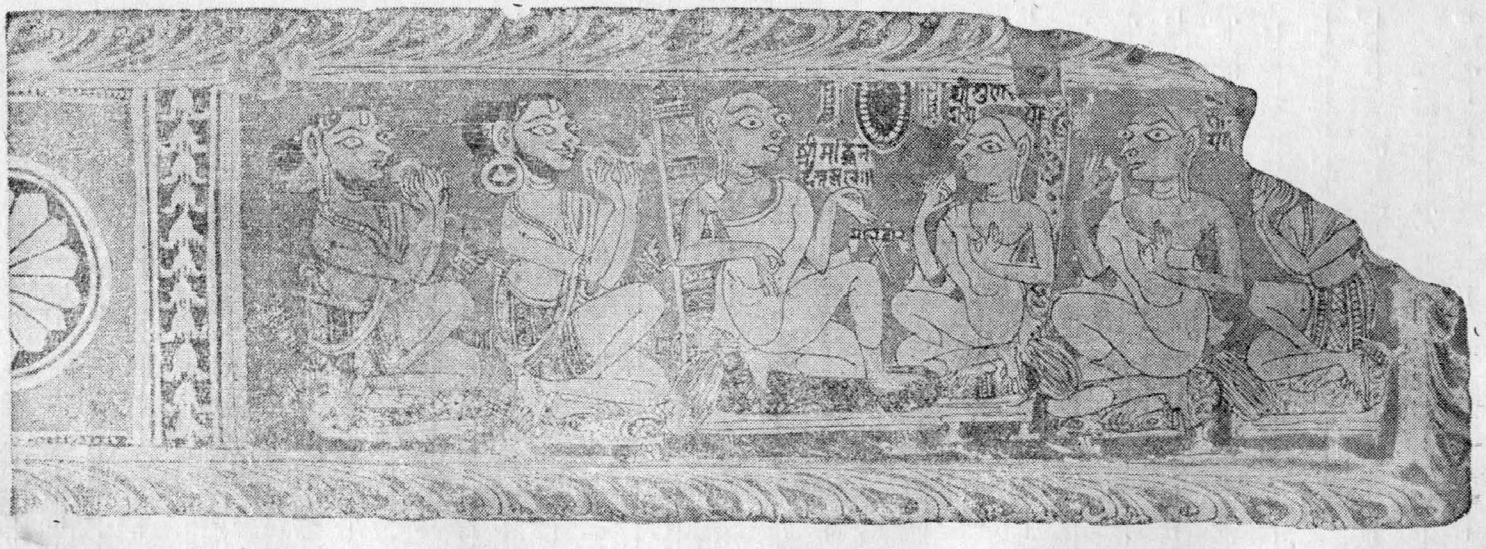

श्री जिनदत्तसूरि और गुणसमुद्राचार्य

[श्री जिनदत्तसूरि सेवासंघ के सौजन्य से]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री जिनदत्तसूरिजी के चित्रों में प्राचीनतम अथवा दूसरे शब्दों में कहा जाय तो इस शैली की प्राचीन काष्ठ-पट्टिका का चित्र जो यहां प्रकाशित किया जा रहा है, श्री जिनदत्तसूरि के आचार्य पद प्राप्ति के पूर्व का है। यह फलक चित्र हमारे "सेठ शंकरदान नाहटा कलाभवन" में सुरक्षित है।

यह काष्ठपट्टिका ३×११$\frac{3}{4}$ इंच की है। इसके चारों ओर बोर्डर है। इस चित्र के तीन खंड हैं। प्रथम खंड में आचार्य श्रीगुणसमुद्र और सामने ही आसन पर सोम-चन्द्रगणि (श्रीजिनदत्तसूरि) बैठे हुए हैं। आचार्यश्री के पृष्ठ भाग में पीठ-फलक है और श्री सोमचन्द्रगणि के नहीं है इससे उनका दीक्षापर्याय में बड़ा होना प्रमाणित है। दोनों के मध्य में स्थापनाचार्यजी हैं, दोनों के पास रजोहरण है, दोनों एक गोडा ऊंचा और एक गोडा नीचा किये हुए प्रवचनमुद्रा में आमने-सामने बैठे हैं। दोनों के श्वेत वस्त्र हैं।

आचार्य श्री के पीछे एक श्रावक बैठा है जिसकी धोती जांघिये की भांति है। कंधे पर उत्तरीय वस्त्र के अतिरिक्त कोई वस्त्र नहीं है जो उस समय के अल्पवस्त्र-परिधान को सूचित करता है। श्रावक के गले में स्वर्णहार है और एक गोडा ऊंचा करके करबद्ध बैठा है, उसके पृष्ठ भाग में दो श्राविकाएं भी इसी मुद्रा में हैं, जिनके गले में हार व हाथों में चूड़ियाँ और कानों में बड़े-बड़े कर्णफूल है। वस्त्र सबके रंगीन और छींटकी भाँति है, केशपाश का जूड़ा बांधा हुआ है। श्रावक के मरोड़ी हुई पतली मूंछ और ठोड़ी के भाग को छोड़कर अल्प दाढ़ी है। श्रावक के खुले मस्तक पर घने बालों का गिर्दा है।

सोमचन्द्रगणि के पृष्ठ भाग में दो व्यक्ति बैठे हैं जिनकी वेषभूषा भी उपर्युक्त श्रावकों के सदृश ही है। चित्र शैली में तत्कालीन प्रथानुसार नेत्र की तीखी रेखाएं और दोनों आँखें इसलिए दिखायी है कि चित्र में एकाक्षीपन का दोष न आवे। चित्र के मध्य खंड में दोनों ओर बोर्डर तथा मध्य में फूल बनाया है जिसके बीच में छिद्र है जो ताडपत्रीय ग्रंथ को डोरी पिरोकर बांधने में काम आता था।

चित्र के दूसरे खण्ड में साध्वियों का उपाश्रय है। पट्ट पर प्रवर्त्तिनी विमलमति बैठी हुई हैं जिनके पृष्ठ भाग में भी पीठफलक सुशोभित है। सामने दो साध्वियाँ बैठी हुई हैं जिनके नाम 'नयश्री साध्वी' और 'नयमतिम्' लिखा हुआ है। तीनों के बीच में स्थापनाचार्यजी रखे हुए हैं, साध्वीजी के पीछे एक श्राविका आसन पर बैठी हुई है जिसपर उसका नाम नंदीसीर (राविका) लिखा हुआ है। चित्रफलक का किनारा टूट जाने से जोड़ा हुआ है।

इस सचित्र काष्ठपट्टिका का समय—इसमें श्रीजिनदत्त-सूरिजी के दीक्षानाम लिखा हुआ होने से सं० ११६९ के पूर्व का तो है ही। इसमें आये हुए साधु-साध्वियों के नाम "गणधरसार्द्धशतक वृहद्वृत्ति" में नहीं मिलते अतः आचार्य पद प्राप्ति से पूर्व श्रीजिनदत्तसूरि जी के आज्ञानुवर्त्तिनी जो साध्वियाँ थीं, उनका नाम प्राप्त होना ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। हमारी राय में इस काष्ठपट्टिका का समय सं० ११५० के आस-पास का है।

अप्रकाशित महत्वपूर्ण काष्ठफलक

जेसलमेर के श्रीजिनभद्रसूरि ज्ञानभंडार में जो श्रीजिन-दत्तसूरि जी और नरपति कुमारपाल की महत्वपूर्ण सचित्र काष्ठपट्टिका थी, वह अभी थाहरूसाह के भंडार में रखी हुई है। उसे देखकर हमने जो संक्षिप्त विवरण नोट किया था उसे यहाँ दिया जा रहा है—

इस चित्र पट्टिका पर '९ नरपति कुमारपाल भक्ति-रस्तु" लिखा हुआ है। इस फलक के मध्य में नवफणा पार्श्वनाथ का जिनालय है जिसकी सपरिकर प्रतिमा के उभयपक्ष में गजारूढ़ इन्द्र और दोनों ओर चामरधारी अवस्थित हैं। दाहिनी ओर दो शंखधारी पुरुष खड़े हैं। भगवान् के बाँयें कक्ष में पुष्प-चंगेरी लिए हुए भक्त खड़े हैं,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिसके पीछे दो व्यक्ति नृत्य करते हुए एवं दो व्यक्ति वाद्य-यंत्र लिए खड़े हैं। जिनालय के दाहिनी ओर श्रीजिनदत्त-सूरि जी की व्याख्यान सभा है। आचार्यश्री के पीछे दो भक्त श्रावक एवं एक शिष्य नरपति राजा कुमारपाल बैठा हुआ है। राजा के साथ रानी व दो परिचारक विद्यमान हैं। आचार्य श्रीजिनदत्तसूरिजी का परिचय चित्रकार ने "श्रीयुगप्रधानागम श्रीमज्जिनदत्त सूरयः ॥९॥ लिखा है।

जिनालय के बाँयें तरफ श्रीगुणसमुद्राचार्य विद्यमान हैं जिनके सामने स्थापनाचार्यजी व चतुर्विध संघ है। चित्र स्थित साधु का नाम पं० ब्रह्मचन्द्र है। पृष्ठ भाग में दो राजपुरुष हैं जिनका नाम चित्र के उपरिभाग में "सहणप (ा)ल" व अनंग लिखा है। साध्वीजी के सामने भी स्थापनाचार्य और उनके समक्ष दो श्राविकाएँ हाथ जोड़े खड़ी हैं। गणधरसार्द्धशतक बृहद्वृत्ति के अनुसार पार्श्वनाथ के नवफणों की प्रथा श्रीजिनदत्तसूरिजी से ही प्रचलित हुई थी। नरभट में नवफणा पार्श्वनाथ प्रतिमा की प्रतिष्ठा सूरिजी ने की थी। वह जिनालय आगे चलकर महातीर्थ के रूप में प्रसिद्ध हो गया।

सोमचन्द्रगणि (श्रीजिनदत्तसूरि) और गुणसमुद्राचार्य

[शंकरदान नाहटा कलाभवन, बीकानेर से]

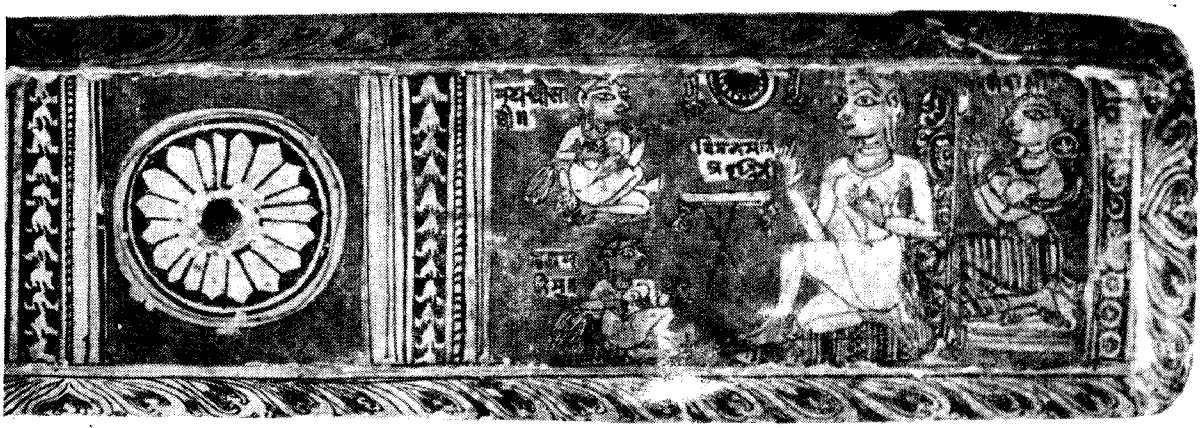

आज्ञानुवर्तिनी साध्वी नयश्री और नयमती

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org